पेप्सिको इंडिया के डायरेक्ट सीडिंग प्रोग्राम के क्रांतिकारी परिणाम

डायरेक्ट सीडिंग से धान की रोपाई में प्रति एकड़ 900 किलो लीटर पानी की बचत हुई * डायरेक्ट सीडिंग का कुल रकबा 1000 एकड़ से बढ़कर इस वर्ष 6000 एकड़ हुआ

जल्लोवाल, 29 जुलाई (मैट्रो सेवा)। पेप्सिको इंडिया ने आज जल्लोवाल में धान की बीजाई के लिए क्रांतिकारी डायरेक्ट सीडिंग प्रणाली की सफलता की घोषणा की। इस अभिनव प्रयोग से लगभग 30 प्रतिशत (900 किलो लीटर प्रति एकड़) पानी की बचत होती है, साथ ही किसानों को काश्त के खर्च में रु. 1500/- प्रति एकड़ की बचत भी होती है।

इस अवसर पर पेप्सिको इंडिया के एग्रीकल्चर डिवीजन के जनरल मैनेजर डा. सुशील सांख्यान ने कहा, ''धान की रोपाई में पानी की अत्यधिक खपत होती है। साल-दर-साल पानी की इस खपत के कारण पंजाब में जमीन के नीचे के पानी का स्तर घटता चला गया। पेप्सिको इंडिया ने भारतीय कृषि को लाभदायक व्यवसाय बनाने तथा पानी की खपत कम करने के लिए धान की रोपाई के लिए डायरेक्ट सीडिंग की क्रांतिकारी विधि ईज़ाद की थी। हमें प्रसन्नता है कि इस तकनीक को किसानों ने बड़े पैमाने पर अपनाया है। केवल सन् 2008 में ही पेप्सिको के साथ डायरेक्ट सीडिंग प्रणाली पर काम कर रहे किसानों ने एक अरब लीटर के लगभग पानी की बचत की थी। सन् 2009 में इस तकनीक को 1050 और किसानों ने भी अपनाया। पंजाब में पर्यावरण के लाभ के साथ-साथ किसानों के आर्थिक लाभ को देखते हुए अब पेप्सिको ने इस प्रयोग को राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु और पांडिचेरी में भी लागू कर दिया है। हमें उम्मीद है कि इस वर्ष हम इस तकनीक का सफलतापूर्वक प्रयोग करते हुए 5 अरब लीटर पानी की बचत कर लेंगे।'' पारंपरिक रूप से धान के बीज किसी छोटी सी नर्सरी में बीजे जाते हैं और फिर लगभग चार सप्ताह बाद धान की पौध को खेतों में रोपा ज़ाता है।

इस पौध को 3 से 4 इंच पानी के नीचे रखा जाता है ताकि खरपतवार की पैदावार को रोका जा सके। इस प्रणाली में पानी की बहुत अधिक खपत होती है। इसके विपरीत, डायरेक्ट सीडिंग प्रणाली में बीजों को सीधे खेत में बोया जाता है जिसमें न केवल 30 प्रतिशत के लगभग पानी की बचत होती है, बल्कि धान की उत्पादन लागत में भी कमी आती है।

डायरेक्ट सीडिंग प्रणाली से पर्यावरण को भी लाभ पहुंचता है क्योंकि मीथेन जैसी जहरीली ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन नहीं होता और जमीन की छिद्रिलता (पानी सोखने वाले सूक्ष्म छेद) भी बनी रहती है, जिससे बाद की फसलों की उत्पादकता बनी रहती है। पेप्सिको, इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट के साथ मिलकर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को मापने का कार्य कर रहा है ताकि डायरेक्ट सीडिंग प्रणाली से पर्यावरण को होने वाले लाभ को रेखांकित किया जा सके।